सच्चाई का बादशाह

अल-मसीह की पेशी

sachchāī kā bādshāh. al-masīh kī peshī

The King of Truth. The Trial of Al-Masih

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 33]

(Urdu—Hindi script)

© 2024 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is derived from R. Gunther https://www.freebibleimages.org/illustrations/ls-jesus-gethsemane/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

पकड़ा गया	1
इनकार	3
यहूदी बुज़ुर्गों के सामने	4
दुबारा इनकार	5
पीलातुस के सामने	7
सज़ाए-मौत का फ़ैसला	10
कुछ आख़िरी बातें	14
इंजील, यूहन्ना 18:1–19:16	16

पकड़ा गया

ईसा मसीह जानता था कि जल्द ही मुझे गिरिफ़्तार किया जाएगा। अब उसने दुआ करके अपने शागिर्दों को ख़ुदा बाप के सुपुर्द कर दिया। तब वह अपने शागिर्दों के साथ निकला और वादीए-क़िदरोन को पार करके एक बाग़ में दाख़िल हुआ। यहूदाह इस्करियोती तो राहनुमा इमामों के पास जा चुका था ताकि ईसा मसीह को पकड़ने में उनकी मदद करे। राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदाह को रोमी फ़ौजियों का दस्ता और बैतुल-मुक़द्दस के कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशालें, लालटैन और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे। ईसा मसीह को मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। उसने निकलकर उनसे पूछा, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”

उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”

वह बोला, “मैं ही हूँ।”

यह सुनकर सब पीछे हटकर ज़मीन पर गिर पड़े। क्या वह अपने शागिर्दों के साथ उन पर टूट पड़ेगा? या क्या वह उन्हें शाप देकर भस्म करेगा? एक और बार ईसा मसीह ने उनसे सवाल किया, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”

उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”
उसने कहा, “मैं तुमको बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इनको जाने दो।”

► **उसने यह क्यों फ़रमाया कि इनको जाने दो?**

वह अच्छा चरवाहा है जो अपनी भेड़ों की बड़ी फ़िकर करता है।

पतरस के पास तलवार थी। अब उसने उसे मियान से निकालकर इमामे-आज़म के ग़ुलाम का दहना कान उड़ा दिया। लेकिन ईसा मसीह ने पतरस से कहा, “तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पियूँ जो बाप ने मुझे दिया है?”

► **प्याला पीने से वह क्या कहना चाहता है?**

जो हो रहा है वह ख़ुदा बाप की तरफ़ से है। वही यह तलख़ प्याला पिला रहा है। दूसरी इंजीलों से हम जानते हैं कि ईसा मसीह ने ग़ुलाम को शफ़ा दी। उसे उसकी भी फ़िकर रही।

► **जितना मसीह का जवाब हलीम था उतना पतरस का रवैया सख़्त था। उसने दुश्मन को देखकर क्या किया?**

उसने तलवार चलाकर ग़ुलाम का कान उड़ा दिया। उसे अभी तक समझ नहीं आई थी कि सलीब की यह राह ईसा मसीह के लिए मुक़र्रर ही थी। अब तक पतरस ज़बरदस्ती ख़ुदा की बादशाही लाना चाहता था। लेकिन इनसान ख़ुदा की बादशाही नहीं ला सकता।

फिर ईसा मसीह के मुख़ालिफ़ों ने उसे बाँध लिया। पहले वह उसे हन्ना के पास ले गए। हन्ना उस साल के इमामे-आज़म कायफ़ा का सुसर था।

इनकार

पतरस ने हिम्मत न हारी। वह शेर के मुँह में जाने को भी तैयार था। अब वह किसी और शागिर्द के साथ ईसा मसीह के पीछे हो लिया। यह दूसरा शागिर्द इमामे-आज़म का जाननेवाला था, इसलिए वह ईसा मसीह के साथ इमामे-आज़म के सहन में दाख़िल हुआ। पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा। फिर इमामे-आज़म का जाननेवाला शागिर्द दुबारा निकल आया। उसने गेट की निगरानी करनेवाली औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ अंदर ले जाने की इजाज़त मिली। लेकिन पतरस को देखकर नौकरानी ने पूछा, "तुम भी इस आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?"

पतरस ने जवाब दिया, "नहीं, मैं नहीं हूँ।" उस्ताद ने पेशगोई की थी कि तू तीन बार मेरा इनकार करेगा।

► **इनकार करने की क्या वजह थी? क्या पतरस डरपोक था?**
पतरस डरपोक नहीं था। उस सहन में जाने से पतरस जान पर खेल रहा था। इसके लिए वह झूठ बोलने के लिए भी तैयार था।

► **लेकिन क्या सच्चे शागिर्द को कभी झूठ बोलने की इजाज़त है?**
नहीं, जो सच्चे और वफ़ादार चरवाहे की भेड़ है उसका झूठ बोलना कभी नहीं जचता।

ठंड थी, इसलिए ग़ुलामों और पहरेदारों ने लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उसके पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा ताप रहा था।

यहूदी बुज़ुर्गों के सामने

इतने में इमामे-आज़म हन्ना, ईसा मसीह की पूछ-गछ करके उसके शागिर्दों और तालीम के बारे में तफ़तीश करने लगा।

► **यह मज़हबी राहनुमा ईसा मसीह की पूछ-गछ क्यों करने लगे?**
यह कोई न कोई बहाना ढूँड रहे थे ताकि सज़ाए-मौत का फ़ैसला कर सकें। उन्हें सच्चाई की परवाह नहीं थी।

ईसा मसीह बोला, "मैंने दुनिया में खुलकर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतख़ानों और बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैंने कुछ नहीं कहा। आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? उनसे दरियाफ़्त करें जिन्होंने मेरी बातें सुनी हैं। उनको मालूम है कि मैंने क्या कुछ कहा है।"

तब एक पहरेदार ने ईसा मसीह के मुँह पर थप्पड़ मारकर कहा, "क्या यह इमामे-आज़म से बात करने का तरीक़ा है जब वह तुमसे कुछ पूछे?"

ईसा मसीह ने जवाब दिया, "अगर मैंने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तूने मुझे क्यों मारा?"

► **अपने जवाब से ईसा मसीह ने किस चीज़ पर ज़ोर दिया?**

अपने जवाब से उसने अपनी बातों की सच्चाई पर ज़ोर दिया। वह तो सच्चा चरवाहा है जिसे सच्चे बाप से भेजा गया है। उसमें झूठ नहीं है, न वह किसी में झूठ बरदाश्त कर सकता है। न उसे पतरस का झूठ, न यहूदी राहनुमाओं की टेढ़ी-मेढ़ी सियासत पसंद थी। मौत के सामने भी वह न दाईं न बाईं तरफ़ हिला। सच बोलना और वफ़ादारी—ऐसी क़ीमती चीज़ें आजकल कहाँ पाई जाती हैं? क्या आप में उसकी सच्चाई है?

फिर हन्ना ने ईसा मसीह को बँधी हुई हालत में इमामे-आज़म कायफ़ा के पास भेज दिया। इमामे-आज़म कायफ़ा के साथ यहूदी अदालते-आलिया के बुज़ुर्ग भी बैठे थे। असल अदालत यही थी।

दुबारा इनकार

पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में दूसरे उससे पूछने लगे, “तुम भी उसके शागिर्द हो कि नहीं?”

लेकिन पतरस ने इनकार किया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

लगता नहीं कि पतरस महसूस कर रहा था कि उससे ग़लती हो रही है। शायद वह दिल में फ़ख़्र भी कर रहा था कि मैं अब तक इस ख़तरनाक जगह में खड़ा हूँ।

फिर इमामे-आज़म का एक ग़ुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिश्ते-दार था जिसका कान पतरस ने उड़ा दिया था, “क्या मैंने तुमको बाग़ में उसके साथ नहीं देखा था?”

पतरस ने एक बार फिर इनकार किया, और इनकार करते ही मुर्ग़ की बाँग सुनाई दी।

अब पतरस को ईसा मसीह की बात याद आई और वह निकलकर ख़ूब रो पड़ा।

► **पतरस क्यों रो पड़ा?**

अचानक उसे ईसा मसीह की बात याद आई कि तू मुझे जानने से इनकार करेगा। उसने एकदम अपनी झूठी हालत महसूस की। उसे इसका एहसास हुआ कि उस्ताद की पाक सच्चाई और वफ़ादारी मुझमें नहीं है। मैं उसकी सच्चाई की राह पर चलने में फ़ेल हो गया हूँ। पतरस हथियार डालकर मान गया कि मेरी हर कोशिश बेफ़ायदा, सिफ़र के बराबर है।

► **पतरस ने हथियार क्यों डाल दिए?**

पहले वह समझता था कि मैं उस्ताद का बेहतरीन शागिर्द हूँ। सब कुछ मेरे क़ाबू में है, और उस्ताद मुझ पर पूरा भरोसा रख सकता है। मैं ही उसकी बादशाही लाऊँगा। मैं ही उसका सबसे बड़ा वज़ीर बन जाऊँगा। लेकिन अब यह ख़याल एकदम ग़लत साबित हुआ।

► **पतरस की हार से हम क्या सीख सकते हैं?**

जो शागिर्द बनना चाहता है ज़रूरी है कि वह पहले अपने तमाम हथियार डाल दे। पहले वह मान ले कि मुझसे कुछ नहीं हो सकता। न मैं ईसा मसीह की मदद करने लायक़ हूँ न अपनी ही ताक़त से अपनी

नजात पा सकता हूँ। एक ही है जो मेरी मदद कर सकता है—वह जो गुनाह और मौत पर फ़तह पाकर जी उठा है। पतरस ने एकदम पहचान लिया कि मेरी अपनी सच्चाई और वफ़ादारी खोखली-सी है। ऊँची दुकान फीका पकवानवाली बात है। और अब मैंने उस्ताद को जानने से इनकार भी किया है। क्या वह कभी मुझे माफ़ करेगा?

पीलातुस के सामने

यहूदी बुज़ुर्गों ने ईसा मसीह को सज़ाए-मौत के लायक़ क़रार दिया। फिर वह क़ैदी को अपने साथ लेकर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम के पास पहुँच गए।

► **यहूदी बुज़ुर्गों ने ईसा मसीह को सीधा सज़ाए-मौत क्यों न दी?** यहूदियों को सज़ाए-मौत देने की इजाज़त नहीं थी। सिर्फ़ रोमी गवर्नर पीलातुस को यह इख़्तियार था।

अब सुबह हो चुकी थी। चूँकि यहूदी फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इसलिए वह महल में दाख़िल न हुए, वरना वह नापाक हो जाते। इसलिए पीलातुस निकलकर उनके पास आया और पूछा, "तुम इस आदमी पर क्या इलज़ाम लगा रहे हो?"

उन्होंने जवाब दिया, "अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आपके हवाले न करते।"

पीलातुस ने कहा, "फिर इसे ले जाओ और अपनी शरई अदालतों में पेश करो।"

लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया, “हमें किसी को सज़ाए-मौत देने की इजाज़त नहीं।”

तब पीलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से उसने ईसा मसीह को बुलाया और उससे पूछा, “क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

ईसा मसीह ने पूछा, “क्या आप अपनी तरफ़ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आपको मेरे बारे में बताया है?”

पीलातुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी अपनी क़ौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया है। तुमसे क्या कुछ सरज़द हुआ है?”

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं है। अगर वह इस दुनिया की होती तो मेरे ख़ादिम सख़्त जिद्दो-जहद करते ताकि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है।
> (यूहन्ना 18:36)

► **क्या ईसा मसीह की बादशाही इस दुनिया की है?**

नहीं। उसकी बादशाही ख़ुदा की बादशाही है।

पीलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाक़ई बादशाह हो?”

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> आप सही कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी मक़सद के लिए पैदा होकर दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है। (यूहन्ना 18:37)

► **ईसा मसीह किस मक़सद के लिए दुनिया में आया?**
वह सच्चाई की गवाही देने दुनिया में आया।

► **यह किस क़िस्म की सच्चाई है?**
सच्चाई एक ऐसी चीज़ है जो ठोस है। जो कभी मिटाई नहीं जा सकती।

► **यह सच्चाई क्यों ठोस है?**
इसलिए कि यह ख़ुदा की मुहब्बत-भरी वफ़ादारी है। इसी वफ़ादारी ने बरदाश्त न किया कि हम बरबाद हो रहे हैं। इसलिए उसने अपना फ़रज़ंद इस दुनिया में भेज दिया ताकि वह अपनी जान गुनाहगार इनसान की ख़ातिर क़ुरबान करे। और यही ठोस वफ़ादारी उसके फ़रज़ंद में भी पाई जाती है। वह सच्चाई यानी मुहब्बत-भरी वफ़ादारी का बादशाह है।

ईसा मसीह पहले कह चुका था कि मैं अच्छा चरवाहा हूँ। सच्चाई का यह बादशाह अच्छा चरवाहा है। यह वह चरवाहा है जो अपनी खोई हुई भेड़ों के पीछे चल पड़ता है ताकि उन्हें बचाए रखे। यह वही चरवाहा है जो अपनी भेड़ों की ख़ातिर अपनी जान भी देता है।

► **मसीह का क्या मतलब है कि जो भी सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है?**

जो ईसा मसीह पर ईमान लाए वह इस शाही चरवाहे की भेड़ बन जाता है, और वह उसकी सुनता है। अब से वह मसीह की इलाही बादशाही का शहरी है। बेशक वह इस दुनिया में बसते हुए अपने घराने और मुल्क का ज़िम्मेदार रुकन रहता है। लेकिन उसे मालूम है कि यह दुनिया मेरा हक़ीक़ी घर नहीं है। मैं दुनिया में अजनबी और मुसाफ़िर हूँ।

► **हम क्यों मुसाफ़िर हैं?**

इसलिए कि हम सच्चाई के चरवाहे की भेड़ें हैं। यह सच्चाई और दुनिया का झूठ आपस में मेल नहीं खाते। इसी लिए हमारा घर इस दुनिया में कभी नहीं हो सकता।

पीलातुस ने पूछा, “सच्चाई क्या है?”

पीलातुस सियासतदान था। उसके नज़दीक सच्चाई की कोई क़दर नहीं थी। ताक़त और पैसे से काम चलता था, और यह पाने के लिए हर चाल चलती थी—बिलकुल आज की सियासत की तरह। उसे इस मुहब्बत-भरी वफ़ादारी से कोई मतलब नहीं था।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

फिर वह दुबारा निकलकर यहूदियों के पास गया। उसने एलान किया, “मुझे उसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली। लेकिन तुम्हारी

एक रस्म है जिसके मुताबिक़ मुझे ईद-फ़सह के मौक़े पर तुम्हारे लिए एक क़ैदी को रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं 'यहूदियों के बादशाह' को रिहा कर दूँ?"

लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, "नहीं, इसको नहीं बल्कि बर-अब्बा को।" (बर-अब्बा डाकू था।)

फिर पीलातुस ने ईसा मसीह को कोड़े लगवाए। फ़ौजियों ने काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। उन्होंने उसे अरग़वानी रंग का लिबास भी पहनाया। फिर उसके सामने आकर वह कहते, "ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!" और उसे थप्पड़ मारते थे।

एक बार फिर पीलातुस निकल आया और यहूदियों से बात करने लगा, "देखो, मैं इसे तुम्हारे पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।" फिर ईसा मसीह काँ-टेदार ताज और अरग़वानी रंग का लिबास पहने बाहर आया। पीलातुस ने उनसे कहा, "लो यह है वह आदमी।"

जो सच्चाई का बादशाह था उसके ज़ख़्मों से ख़ून टपक रहा था। जो अकेला ही इनसान को नजात दे सकता था उसे बदतरीन मुजरिम की तरह पेश किया गया था। जो हर खोई हुई भेड़ की खोज में रहता था उसे पाँवों तले कुचला गया था।

उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उनके मुलाज़िम चीख़ने लगे, "इसे मसलूब करें, इसे मसलूब करें!"

पीलातुस ने उनसे कहा, “तुम ही इसे ले जाकर मसलूब करो। क्योंकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।”
यहूदियों ने इसरार किया, “हमारे पास शरीअत है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि वह मारा जाए। क्योंकि इसने अपने आपको अल्लाह का फ़रज़ंद क़रार दिया है।”

► **अब यहूदी राहनुमा असली इलज़ाम पर उतर आए थे। वह क्या था?**

इलज़ाम यह था कि वह अपने आपको अल्लाह का फ़रज़ंद समझता है।

यह सुनकर पीलातुस मज़ीद डर गया।

► **वह क्यों डर गया?**

उसने सोचा, अगर ईसा मसीह अपने आपको अल्लाह का फ़रज़ंद समझता है तो ऐसा न हो कि वह मेरे ख़िलाफ़ कोई जादू-टोना करे।

दुबारा महल में जाकर उसने ईसा मसीह से पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?”
लेकिन ईसा मसीह ख़ामोश रहा। पीलातुस ने उससे कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मसलूब करने का इख़्तियार है?”
ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> आपको मुझ पर इख़्तियार न होता अगर वह आपको ऊपर से न दिया गया होता। इस वजह से उस शख़्स से ज़्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिसने मुझे दुश्मन के हवाले कर दिया है।" (यूहन्ना 19:11)

► **पीलातुस को किससे इख़्तियार मिला था?**

ख़ुदा से।

► **ईसा मसीह फ़रमाता है कि पीलातुस से ज़्यादा क़ुसूरवार कोई और है। वह कौन?**

वह जिसने उसे दुश्मन के हवाले कर दिया है।

► **वह कौन था?**

यहूदाह भी और वह तमाम यहूदी बुज़ुर्ग भी जिन्होंने उसे पकड़कर गवर्नर के हवाले कर दिया।

इसके बाद पीलातुस ने उसे आज़ाद करने की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख़ चीख़कर कहने लगे, "अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहनशाह क़ैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह शहनशाह की मुख़ालफ़त करता है।"

इस तरह की बातें सुनकर पीलातुस ईसा मसीह को बाहर ले आया। फिर वह जज की कुरसी पर बैठ गया। उस जगह का नाम "पच्चीकारी" था। अब दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे। उस दिन ईद के लिए तै-

यारियाँ की जाती थीं, क्योंकि अगले दिन ईद का आग़ाज़ था। पीलातुस बोल उठा, “लो, तुम्हारा बादशाह!”
लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले जाएँ! इसे मसलूब करें!”
पीलातुस ने पूछा, “क्या मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब पर चढ़ाऊँ?”
राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवाए शहनशाह के हमारा कोई बादशाह नहीं है।”
फिर पीलातुस ने ईसा मसीह को उनके हवाले कर दिया ताकि उसे मसलूब किया जाए।

कुछ आख़िरी बातें

यों ईसा मसीह पक्के इरादे से सलीब की राह पर चलता रहा। उसे मौत से बचने के कई मौक़े थे। उसे मालूम था कि यहूदाह उसे दुश्मन के हवाले करेगा। वह यरूशलम को छोड़ सकता था। लेकिन वह जान-बूझकर उस बाग़ में गया जो यहूदाह जानता था। बाद में भी वह बच सकता था। यहूदी अदालते-आलिया और पीलातुस के सामने वह इनकार कर सकता था। लेकिन उसने ऐसा न किया। वह जानता था कि मुझे यह तलख़ प्याला पीना ही है।
मुसीबत में भी वह अच्छा चरवाहा था। पकड़े जाते वक़्त उसने अपने शागिर्दों को पकड़े जाने से बचाया। उसने पतरस को तलवार चलाने से रोककर ग़ुलाम का कान ठीक किया। उसे रोमी गवर्नर पीलातुस की भी फ़िकर थी। वह उसे भी सच्चाई की राह पर लाने से न झिजका।

रहा यह सवाल : आप इस वफ़ादार शाही चरवाहे के सामने क्या करेंगे? क्या आप उसे यहूदी राहनुमाओं की तरह रद करेंगे? या क्या आप पीलातुस की तरह तंज़ कसकर कहेंगे कि सच्चाई क्या है?

या क्या आप यहूदाह की तरह होंगे? वह शागिर्द तो था, लेकिन वह उस्ताद से सिर्फ़ फ़ायदा उठाना चाहता था। ख़ज़ानची के तौर पर उसने बेईमानी की। और जब देखा कि मेरी बात नहीं बन रही तो उसने पैसों के लालच में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।

लेकिन शायद आप पतरस की-सी सोच रखेंगे? आप अपने आपको मसीह के वज़ीर समझते हैं। आप समझते हैं कि मैं अपनी ही ताक़त से सब कुछ करूँगा, नजात का काम भी।

मेरे दोस्त, अगर आप सोचते हैं कि आप ज़रा भी अपनी नजात ख़ुद हासिल कर सकते हैं तो आप सच्चे शागिर्द नहीं बन सकते। हाँ, पतरस सच्चा शागिर्द बन गया, लेकिन बाद में। पहले उसे मानना पड़ा कि मैं कुछ नहीं कर सकता। अगर मैं अपनी ताक़त से कुछ करना चाहूँ तो सरासर फ़ेल हो जाऊँगा, उसका इनकार करने तक गिर जाऊँगा।

मेरे अज़ीज़, नजात पाने की एक ही रास्ता है : यह कि अपने हथियार डालकर अपनी जान को उसके सुपुर्द करो। यही मान लो कि मुझसे कुछ नहीं हो सकता। ऐ ईसा मसीह, तू ही सब कुछ है। तू ही मुझे आज़ाद कर सकता है। मुझे अपनी भेड़ बना दे। मुझे हरी चरागाहों पर ले जा, ऐसी जगहों पर जहाँ चश्मे का ताज़ा पानी उबलता रहता है। जहाँ दुश्मन

के रूबरू भी दस्तरख़ान बिछा रहता है। मुझे इस तरो-ताज़गी की अशद ज़रूरत है। ऐ मेरे आक़ा, मुझमें नजात पाने की कोई ताक़त नहीं है। इसलिए आ, मेरी मदद कर। आमीन।

इंजील, यूहन्ना 18:1–19:16

पकड़ा गया

यह कहकर ईसा अपने शागिर्दों के साथ निकला और वादीए-क़िदरोन को पार करके एक बाग़ में दाख़िल हुआ। यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करनेवाला था वह भी इस जगह से वाक़िफ़ था, क्योंकि ईसा वहाँ अपने शागिर्दों के साथ जाया करता था। राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदाह को रोमी फ़ौजियों का दस्ता और बैतुल-मुक़द्दस के कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशा-लें, लालटैन और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे। ईसा को मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनाँचे उसने निकलकर उनसे पूछा, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”

उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”

ईसा ने उन्हें बताया, “मैं ही हूँ।”

यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता था, वह भी उनके साथ खड़ा था। जब ईसा ने एलान किया, “मैं ही हूँ,” तो सब पीछे

हटकर ज़मीन पर गिर पड़े। एक और बार ईसा ने उनसे सवाल किया, “तुम किस को ढूँड रहे हो?”
उन्होंने जवाब दिया, “ईसा नासरी को।”
उसने कहा, “मैं तुमको बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इनको जाने दो।” यों उसकी यह बात पूरी हुई, “मैंने उनमें से जो तूने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।”
पतरस के पास तलवार थी। अब उसने उसे मियान से निकालकर इमामे-आज़म के ग़ुलाम का दहना कान उड़ा दिया (ग़ुलाम का नाम मलख़ुस था)। लेकिन ईसा ने पतरस से कहा, “तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पियूँ जो बाप ने मुझे दिया है?”
फिर फ़ौजी दस्ते, उनके अफ़सर और बैतुल-मुक़द्दस के यहूदी पहरेदारों ने ईसा को गिरिफ़्तार करके बाँध लिया। पहले वह उसे हन्ना के पास ले गए। हन्ना उस साल के इमामे-आज़म कायफ़ा का सुसर था। कायफ़ा ही ने यहूदियों को यह मशवरा दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्मत के लिए मर जाए।

इनकार

पतरस किसी और शागिर्द के साथ ईसा के पीछे हो लिया था। यह दूसरा शागिर्द इमामे-आज़म का जाननेवाला था, इसलिए वह

ईसा के साथ इमामे-आज़म के सहन में दाख़िल हुआ। पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा। फिर इमामे-आज़म का जाननेवाला शागिर्द दुबारा निकल आया। उसने गेट की निगरानी करनेवाली औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ अंदर ले जाने की इजाज़त मिली। उस औरत ने पतरस से पूछा, “तुम भी इस आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?”

उसने जवाब दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”

ठंड थी, इसलिए ग़ुलामों और पहरेदारों ने लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उसके पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा ताप रहा था।

यहूदी बुज़ुर्गों के सामने

इतने में इमामे-आज़म ईसा की पूछ-गछ करके उसके शागिर्दों और तालीम के बारे में तफ़तीश करने लगा। ईसा ने जवाब में कहा, “मैंने दुनिया में खुलकर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतख़ानों और बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैंने कुछ नहीं कहा। आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? उनसे दरियाफ़्त करें जिन्होंने मेरी बातें सुनी हैं। उनको मालूम है कि मैंने क्या कुछ कहा है।”

इस पर साथ खड़े बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़ मारकर कहा, “क्या यह इमामे-आज़म से बात करने का तरीक़ा है जब वह तुमसे कुछ पूछे?”
ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैंने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तूने मुझे क्यों मारा?”
फिर हन्ना ने ईसा को बँधी हुई हालत में इमामे-आज़म कायफ़ा के पास भेज दिया।

दुबारा इनकार

पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में दूसरे उससे पूछने लगे, “तुम भी उसके शागिर्द हो कि नहीं?”
लेकिन पतरस ने इनकार किया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।”
फिर इमामे-आज़म का एक ग़ुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिसका कान पतरस ने उड़ा दिया था, “क्या मैंने तुमको बाग़ में उसके साथ नहीं देखा था?”
पतरस ने एक बार फिर इनकार किया, और इनकार करते ही मुर्ग़ की बाँग सुनाई दी।

पीलातुस के सामने

फिर यहूदी ईसा को कायफ़ा से लेकर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम के पास पहुँच गए। अब सुबह हो चुकी थी और चूँकि

यहूदी फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इसलिए वह महल में दाख़िल न हुए, वरना वह नापाक हो जाते। चुनाँचे पीलातुस निकलकर उनके पास आया और पूछा, “तुम इस आदमी पर क्या इलज़ाम लगा रहे हो?”

उन्होंने जवाब दिया, “अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आपके हवाले न करते।”

पीलातुस ने कहा, “फिर इसे ले जाओ और अपनी शरई अदालतों में पेश करो।”

लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया, “हमें किसी को सज़ाए-मौत देने की इजाज़त नहीं।” ईसा ने इस तरफ़ इशारा किया था कि वह किस तरह मरेगा और अब उसकी यह बात पूरी हुई।

तब पीलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से उसने ईसा को बुलाया और उससे पूछा, “क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?”

ईसा ने पूछा, “क्या आप अपनी तरफ़ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आपको मेरे बारे में बताया है?”

पीलातुस ने जवाब दिया, “क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी अपनी क़ौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया है। तुमसे क्या कुछ सरज़द हुआ है?”

ईसा ने कहा, “मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं है। अगर वह इस दुनिया की होती तो मेरे ख़ादिम सख़्त जिद्दो-जहद करते ताकि

मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है।"

पीलातुस ने कहा, "तो फिर तुम वाक़ई बादशाह हो?"

ईसा ने जवाब दिया, "आप सही कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी मक़सद के लिए पैदा होकर दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है।"

पीलातुस ने पूछा, "सच्चाई क्या है?"

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

फिर वह दुबारा निकलकर यहूदियों के पास गया। उसने एलान किया, "मुझे उसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली। लेकिन तुम्हारी एक रस्म है जिसके मुताबिक़ मुझे ईद-फ़सह के मौक़े पर तुम्हारे लिए एक क़ैदी को रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं 'यहूदियों के बादशाह' को रिहा कर दूँ?"

लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, "नहीं, इसको नहीं बल्कि बर-अब्बा को।" (बर-अब्बा डाकू था।)

फिर पीलातुस ने ईसा को कोड़े लगवाए। फ़ौजियों ने काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। उन्होंने उसे अरग़वानी रंग का लिबास भी पहनाया। फिर उसके सामने आकर वह कहते, "ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!" और उसे थप्पड़ मारते थे।

एक बार फिर पीलातुस निकल आया और यहूदियों से बात करने लगा, “देखो, मैं इसे तुम्हारे पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।” फिर ईसा काँटेदार ताज और अरग़वानी रंग का लिबास पहने बाहर आया। पीलातुस ने उनसे कहा, “लो यह है वह आदमी।”
उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उनके मुलाज़िम चीख़ने लगे, “इसे मसलूब करें, इसे मसलूब करें!”
पीलातुस ने उनसे कहा, “तुम ही इसे ले जाकर मसलूब करो। क्योंकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।”
यहूदियों ने इसरार किया, “हमारे पास शरीअत है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि वह मारा जाए। क्योंकि इसने अपने आपको अल्लाह का फ़रज़ंद क़रार दिया है।”
यह सुनकर पीलातुस मज़ीद डर गया। दुबारा महल में जाकर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?”
लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। पीलातुस ने उससे कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मसलूब करने का इख़्तियार है?”
ईसा ने जवाब दिया, “आपको मुझ पर इख़्तियार न होता अगर वह आपको ऊपर से न दिया गया होता। इस वजह से उस शख़्स

से ज़्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिसने मुझे दुश्मन के हवाले कर दिया है।”
इसके बाद पीलातुस ने उसे आज़ाद करने की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख़ चीख़कर कहने लगे, “अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहनशाह क़ैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह शहनशाह की मुख़ालफ़त करता है।”
इस तरह की बातें सुनकर पीलातुस ईसा को बाहर ले आया। फिर वह जज की कुरसी पर बैठ गया। उस जगह का नाम “पच्चीकारी” था। (अरामी ज़बान में वह गब्बता कहलाती थी।) अब दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे। उस दिन ईद के लिए तैयारियाँ की जाती थीं, क्योंकि अगले दिन ईद का आग़ाज़ था। पीलातुस बोल उठा, “लो, तुम्हारा बादशाह!”
लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले जाएँ! इसे मसलूब करें!”
पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब पर चढ़ाऊँ?”
राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवाए शहनशाह के हमारा कोई बादशाह नहीं है।”

फिर पीलातुस ने ईसा को उनके हवाले कर दिया ताकि उसे मस-
लूब किया जाए।